हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)

(वसंत)(पाठ 7)(हजारी प्रसाद द्विवेदी – क्या निराश हुआ जाए)

(कक्षा 8)

प्रश्न अभ्यास

आपके विचार से

प्रश्न 1:
लेखक ने स्वीकार किया है कि लोगों ने उन्हें भी धोखा दिया है फिर भी वह निराश नहीं है। आपके विचार से इस बात का क्या कारण हो सकता है?

उत्तर 1:
लेखक का यह स्वीकार करना कि लोगों ने उसे धोखा दिया है। यह उसकी पीड़ा को दर्शाता है। मगर फिर भी वह निराश नहीं है उसका मानना है कि समाज में अभी भी बहुत से लोग ऐसे हैं जो ईमानदार हैं। यदि वह अपने धोखे के बारे में समाज में बात करेगा तो वह उन लोगों का भी अपमान कर देगा जो ईमानदार हैं। उसे समाज में सुधार की उम्मीद है इसी कारण वह निराश नहीं है।

प्रश्न 2:
समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं और टेलीविजिन पर आपने ऐसी अनेक घटनाएँ देखी–सुनी होंगी जिनमें लोगों ने बिना किसी लालच के दूसरों की सहायता की हो या ईमानदारी से काम किया हो। ऐसे समाचार तथा लेख एकत्रित करें और कम–से–कम दो घटनाओं पर अपनी टिप्पणी लिखें।

उत्तर 2:
छात्र कक्षा में अध्यापक की सहायता से उपरोक्त कार्य को पूर्ण करेंगे।

प्रश्न 3:
लेखक ने अपने जीवन की दो घटनाओं में रेलवे के टिकट बाबू और बस कंडक्टर की अच्छाई और ईमानदारी की बात बताई है। आप भी अपने या अपने किसी परिचित के साथ हुई किसी घटना के बारे में बताइए जिसमें किसी ने बिना किसी स्वार्थ के भलाई, ईमानदारी और अच्छाई के कार्य किए हों।

उत्तर 3:
छात्र अपने अनुभव और योग्यता के आधार पर इस कार्य को पूर्ण करेंगे।

पर्दाफाश

प्रश्न 1:
दोषों का पर्दाफाश करना कब बुरा रूप ले सकता है?

उत्तर 1:
किसी का उपहास उड़ाने के लिए और केवल उसकी बुराइयों को ही उजागर करने के लिए दोषों का पर्दाफाश किया जाना बुरा रूप ले सकता है हमें यदि किसी के दोषों को उजागर करना है तो उसकी अच्छाइयों को भी उजागर करना चाहिए जिससे तुलनात्मक व्यवहार किया जा सके।

प्रश्न 2:
आजकल के बहुत से समाचार पत्र या समाचार चैनल 'दोषों का पर्दाफ़ाश' कर रहे हैं। इस प्रकार के समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता पर तर्क सहित विचार लिखिए?

उत्तर 2:
आजकल के लगभग सभी समाचार पत्र और न्यूज चैनल किसी न किसी पार्टी से प्रभावित दिखाई देते हैं। वे केवल अपनी पार्टी की भक्ति करते हैं उनके अनुरूप खबरें दिखाते हैं। वे केवल भटकाने का प्रयास करते हैं। सही खबर कभी नहीं दिखाते हैं । इस प्रकार के समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता भी संदेहास्पद लगती है।

कारण बताइए

प्रश्न 1:
निम्नलिखित के संभावित परिणाम क्या–क्या हो सकते हैं ? आपस में चर्चा कीजिए,
जैसे–ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है। परिणाम–भ्रष्टाचार बढ़ेगा।

प्रश्न 1:
"सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है।" ....

उत्तर 1:
सही लोगों के प्रति अत्याचार बढ़ना।

प्रश्न 2:
झूठ और फरेब का रोजगार करने वाले फल–फूल रहे हैं। ....

उत्तर 2:
बेईमानी का फलना – फूलना।

प्रश्न 3:
हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम। ....

उत्तर 3:
भ्रष्टाचार का बढ़ना ।